



Name → Rupali Bala Ray

Sub → Lachit Borphukan

Class → VII

Roll No → 41

Design

C. S. S. 21/01/22
B. B. S. 21/01/22
A. T. S. 21/01/22
S. H. S. 21/01/22
D. S. S. 21/01/22

ଲାଟିଭ ବଦ୍ୟୁକର

ଆମଙ୍କୁଣିଃ ଅଶ୍ରମୀଶ୍ରା ଜୀଜିତ -ଆହୁରା ଉତ୍ସମୀଶ୍ରାଳ
ପ୍ରାଚୀମାନ ଇଲେ ଲାଟିଭ ବଦ୍ୟୁକଣ । ଉତ୍ସମୁଦ୍ରାତ ଏହି
କଥାତ ତଥ୍ୟ ଲାଜିପ ଯେ ଦୀଲଙ୍କବ କ୍ଷେତ୍ର ଅଶ୍ରମ
ଲାଟିଭ ବଦ୍ୟୁକଣକୁ ଆଖି ଜୀବିଷିଧାର୍ଥ ଯୁଦ୍ଧବ ଏହି-
ଆନନ୍ଦ -ଶାନ -ଆହୁ ଆଖି ଦୂଷାପ୍ରେମିକ ଦୀଲ ଦୁଲି
ବନ୍ଦିର୍ବ ଲାଟିଭ ବଦ୍ୟୁକଣବ ନାମର୍ଦ୍ଵ ପ୍ରଥମମୁଢ଼ ମରବେ
ଆହେ । ଅଞ୍ଚାମଳ ଏହି ପ୍ରେମିକ ହୋ ଜଙ୍ଗ ଇଲେ ଲାଟିଭ
ବଦ୍ୟୁକଣ । ଦୂଷାପ୍ରେମିକ ଦୀଲ ଲାଟିଭ ତକୁଣଫଳି
ନିଜ ମାତୃଭାଷିକ ଜୋଲିପାଇଁ ଜୋଲିବିଷ କବିତି
ଆନିଦ୍ରେ । ୧୯୧୯ ଚନ୍ଦ ଜାହାନିକ ଜୀବିଷିଧାର୍ଥ ଚନ୍ଦି
ବିଭ୍ୟାତ ଯୁଦ୍ଧ ତେଣୁବେଳେ ତବୈଶ୍ଵର ଅଶ୍ରମୀଶ୍ରା ଚନ୍ଦି
ଚାରିନ ହୁଏବି ତେଣୁବେଳାପାଇଁ ଅଶ୍ରମ ଆଧିକାଳ
କାଳାଳ ପାଠିବାଲ୍ବକାର ମରିଷିମୁହଁ ତଥି -ଆଶର ଜୀବିଜା
ପଦ୍ମବୀ -ଲାଧୁଧାତ୍ରିଲ ।

ଲାଟିଭ ଜମ୍ବ ଆଖି କୋଣପୁଃ : ଲାଟିଭ ଜମ୍ବାଲ ଉଠିକା
ମି-ବାସ -ଆଖି -ଶାନ ଜବା -ନାମାମ୍ବ । ଆନନ୍ଦ
ତେଣୁବେଳେ ଜମ୍ବ ରୁମ ଚାନ୍ଦିଲ କାନ୍ଦିଲାଳ ପ୍ରଥମାର୍ଦ୍ଦିତ
ଚର୍ଚିଟିଲ ଆଖି ଉତ୍ସମୁଦ୍ରାନ ଡାଙ୍ଗାର୍ତ୍ତିଲ ଉଚଳେ-ଖାଜାତ
କଂଶଦାତ ଅଟିଲା ଚର୍ଚି -ରାମକୁ -ବନବ୍ଲା ଦ୍ଵିତୀ ବର୍ଷି ।
ଲାଟିଭ ଚିତ୍ତ -ନାମ -ରୁମ ଚାନ୍ଦିଲ ଉତ୍ସମୁଦ୍ରାନ ଆମ୍ବଲି -ବଦ୍ୟୁକଣ
ଆଖି ମାତୃତ ନାମ ଇଲେ ନାଜିଶବ୍ଦି -ଆରିଜାହ ।

लालित चक्रवर्तीजना वर्षग्रन्थाक - आठिल । तांत्रे खेळिल
इले लालुपाठ्याना, माझी आख 'हावंविला'। लालित
एजणी याम्हेकव्य नाम आठिल जागता। सर्वे
-कुणे अतुलनीम् शब्द खाली जाहेवारा पाठू घर्गढे
जर्यावज फ्रिंडी तिम्हा फृष्टार्थिल !

असंवेपता लालित द्वारा
आरवी आख दृढ आठिल, ये काम वगळेला दूळी
द्वारे फर्णिवृ, फर्कार्ड्या रुप नकाबे। लालितज
आन द्वारा दैविक्ये इले गळता आसार्धकवादी
। चमामिरि आमुलीभेड पूर्ववृष्ट्या उपम्युक्त शिळा
दिलेले छांका कासिटिल आख आव वाते दुष्कृता
शिळातक फ्रिंगे चक्रवर्तीनमान परित्त लोपवार
नियुक्ति दिलेले। चक्रवर्तीने लालितेऊ अव्याहव
फार्थास उभयिति आव्याम साजनीति, भागिति विद्यान
वा नुउयिति, उगमाज्ञनीति, अर्थनीति आदित विश्व
शिळार्थिले। चमामिरि आमुलीम् नियुक्त आ उभयुक्त
चानक्तर्त वार्षा आख विजस जीवनव द्वाराओ आमुल
अपलेला उमिळिला दिलेले शब्द वर्णिले। चमामिरि
आमुलील साजकार्यवृत्तीक विशेषज्ञ नामि लालिते
यां दृष्ट्या नियुक्तिले।

चमामिरि आमुली वसतासद्वाल चक्रवर्ती द्वारा
विलेले। लालिते उमिळेले वाजधसत वियुक्ति
लाज वर्णिले। तेऊं माजमुक्ती उर्दीवीयाव
शांतिविता आमुली फ्रिंगे नियुक्ति दिला इले !

३२ वाटो वाटो उक्त प्रस्तुति सालविलास दरिद्र
आन अद्यगे नाचिल। रांचीर्धवा आमुली छिपाए
लाचिल खजमखी जडबीभाष आमाल-आन, खान
पूर्ण असि हेल हुउँ उक्त शायित लाचिल।
मान खजमखी यलेक शय लाचिल हुउत्तोल
हेल आलेहो शर लाजिता आन भ मधीय
रिच्छामूर्त आमलिपान, यगपान-धन असि
आजवाई दिय लाजित। आन लाउ निम्बु
बरउरा, नाचिल वाह रहा अरुल लाए
हुल द्य हुउँ बाज-मधीत माज दशा
आठुतीया आस नोपर हमलमन्तुजा उपर्यु
शाकि लजाप्पीया यम्पात्तोल जानित-तुलिव
पालिल आस खज मन्तीष्ठे दक्षेहो त्तोलापण
विच्छिन्न द्यक्षिले हुउत्तोल उमार्हित कहो, आवेग
जानित खालिल।

शारी धिसा आमुलीं दले बिम्ब प्रमाणित
पाह लाजगर्ज आलमु एवतिलित लाचिल पाहपन्न
- हिउँ हुरु शापिल आस लिन्दुलिल पाहुँ त्तु
हुँलायतक्ता हुल। हुँलायतक्ता छिपाए
लाचिल दायित आचिल लाङ्गुल्लह त्तुँलार्होल
जहायर्हित कहा आवे हुउत्तोलावा प्रक्षिप्त
मिया। लाचिल केहिनामान हुँलाक इम्बाल
जालदास प्रक्षिप्त मिलिल द्य हुम्बुहुप्तिला

ଦ୍ୟାମାନ ନିର୍ମିତ ଯାତ୍ରାରେ ଅଳ୍ପାଲ ଚନ୍ଦ୍ରନା ହୋଇଥାଏ
ଯଶାବ ପକଳି ଦୋଳାଏ ଯଶ ଅବାର ବାଜିଟିଲ ।
ଦ୍ୟାମାନଙ୍କ ପାଠତ ନାଚିକ କୁଳିମ୍ବା ରଖିଥା ଏହା
ବିଶୁଦ୍ଧ ମିମ୍ବା ଛୁଳେ । ଆଖ ପାଠତ ରତ୍ନଙ୍କ
କିମଳୁ କୁଳିମ୍ବା ଫୁଲଗଢ଼ ଯାତ ଲାହ ପଣ୍ଡଳ ।
କିମଳୁ କୁଳିମ୍ବା ଫୁଲଙ୍କା ରଳେ ଜୀବଜାତିଙ୍କ ଉଚସତ
କିମଳୁ କୁଳିମ୍ବା ଖେଳି ପ୍ରୟାନ ବିଷମ୍ବା । ରତ୍ନ ନିର୍ମିତ
କିମଳୁ କୁଳିମ୍ବା ଦୁଇନ ଯକ୍ଷାଲ ପାଠତ ଲାହିରା ଦୋଳା-
ରଜାକାଳିମ୍ବା ବକଳାଟ ଗନ୍ଧତ ନିର୍ମିତ ମିମ୍ବା ରଳେ ।
ଦୋଳାରାଜାକାଳିମ୍ବା 'ଯକ୍ଷପୁ' କିମଳୁ ଲାହିରା କଜା
ରା ବାଜାରର ଦୋଳାରାଜାକାଳିମ୍ବା ଯପଳ ଆଖ
ରତ୍ନକୁଳାପଣେ ଲାହ ଖାଲି- ପରଦିମ୍ବା ଯପଳ ଚଳାଏ
ବାଜିଟିଲ ।

୧୯୭୪ ଚନ୍ଦ୍ର ପାଠିଲେ ପ୍ରତାପମିଶ୍ର ମୃଦୁ
ଶ୍ଵର । ରତ୍ନକୁ ପାଠତ ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟମର ଲାହ କୁଳିମ୍ବା
ଚୁଲାମଧ୍ୟ । ରତ୍ନ ନିର୍ମିତ କିମଳୁ କାର୍ଯ୍ୟକଳ୍ପ
ରାଜ୍ୟର କଜା ଆଚିଲ । ଚୁଲାମଧ୍ୟ ମୃଦୁଳ
ପାଠତ କୁତ୍ରିନର୍ଜନ କଜା ରମ୍ଭ । ରତ୍ନକୁଳାପଣ ନିର୍ମିତ
ଅଧିକାରୀ ଶ୍ରୀକିଶ୍ମରତନ ବିଜେଷ ଉଲ୍ଲଙ୍ଘନୀୟ ଏହିକା
ପଢା ରାଜିଲ । ଆଖ ପାଠତ ୧୯୭୬ ଚନ୍ଦ୍ର
କମ୍ପିଟର ମିଶ୍ର ବାଜାରପାଠିକ କୁଳିମ୍ବା । କମ୍ପିଟର
ମିଶ୍ର ଆଚିଲ ଲାହିରା କିମଳୁ କିମଳୁରମ୍ଭନା ।

जागृतिज्ञ शिरकृष्ण निवृत्त चमाजल धनापि ॥
 मिहेजुगलर्वि असम आश्रमन राजुल । अहंका
 र्षी आश्रमनस राजुल भासपा नाम्बु ।

लाचित वा लाचिल : लाचित एक विक्रमस्त्र
 आठिल हे परिविश्वित लग्नत शास शोराटक
 ठेण्ठे उत्तरांश्चाटवा . निजल लाकीति शलवि
 वणवि उपमुक्ते . नीति लय आलितिना
 चालांकाश चमाजेदि ३५५८ चन्द ज्ञेयसंखाल
 ठेण्ठे निजल आभासिक जोटदोष नवुवाटक
 आदनाति राजुल । राम्भाति निविन्दुलत अभ्यु-
 आभासिक इति ठेण्ठे विजव प्रभुवा . विमुक्तनातु
 दक्षिणि । अपूर्व मउल प्रथान द्वारा नीति आठिल
 अपेक्षात् . या इत्तमुलि आश्रम्भत ।

वर्षे दमित्तु भाविता, चमामा लाचित्तु
 निधासन रामवि दिल । ठेण्ठे दमित्तुरवास आठिल
 ३५६ इतिवादः ॥

(१) आमसज्जुविषपाला आत्मूलिका राम्भ
 मउल दमित्तु आठिल धर्मां भाव जे॒र्म॑११११११११
 । ए३० आठिल त्राम्भात्तु रासजोराँ एविमालत
 इत्तुवि ।

(२) इवास - श्रीडिलाल पाला आलद्योपाठ्टिलका

ઝાગાથી ઇસ્થ રાસુંદર જોશી રૂઢુંલ લજા
૭૩૦ અને ટોલયાટ રમ્ફના !

૬ અનુભવ અનિષ્ટ આચિત્ત
રાસુંદર રાસુંદર રાસુંદર રાસુંદર લલાલીભી
જોશી મુરૂજાન | રૂઢુંલ લજા ૪૦૦ અને
ટોલયાટ એવા ।

દુઃખાઠી - હુમામારી જાહેર વરસ્તુ । એવી જોશીનાનિ
છોલ ડીકો કુંભ લાઠી રાસુંદરના ટોલાંગાબદ
યાજની વર્ષિદેંડ ચિકારીના જિરું આંત લાઠી
યકૂદુરાંધી સામનીરું ટોલાં જોનાટી ભાશણ ડોંખિય
યાણદિ ઊંલ બાઈ - આચિત્ત | અણણું (રૂઢુંલાફ)
દર્દી યાખિયિલ | હાસા મુદ્રિંદું | રમ્ફ શોગું બાચિત્ત |
યલં ભાતાં આખરીના - હુશુંટિન | રૂડુંદું - ચનલ
દ્વિતીયાર્થિ યાણદિ આચિત્ત એ સામનીરું
અટુંદ્રોંદ્રો | અણિ હુમાનાં આંત અણમણ
સીજા, અફુળાંદ્રું લાઠીન અણ | યકૂદુલસ ઉચ્ચાં
સજાઘાટી | બાંદુંદ્રીન | અણમીભી રૂડુંબાંનાનાં
એવાં અસુલન હું રાનમાંદ્રો માનિય હુંલ
જાંદે અણાં રાનમાંદ્રો - દુંદીન અણાં
દુંદીન જાંદે દુંદીની જાણના દુંદીન
રાનાંદ્રી અણમણાં ખણા - વઠણાં | રૂઢુંલાફ
અણાંદ્રો - વઠણાં |

लाठी ८५ परम्परागते एवं कथा राजस्थानी उपलक्षि
 त विविचित्र हुए अप्रभ शिमार्वेई काञ्जीनी नवउया,
 एवं अन्य असमीया द्वयो आवे द्वयवासिन्हि
 यदि निजसे दमिष्व शुचासंस्कृति आवर
 बन्ध छिट्ठे तुलुलाटक मोजलै जलाई
 बन्धिय नोपासाल द्वोग बन्धिय नाई। तिउ
 बन्धिय निर्देश जीति बन्धिले द्वय बोगबोय
 मेनाई। यदि निजसे दमिष्व शमिधि जाये पालन
 बफहुव वा निजसे द्वयर्घुत अप्राहिला पठते,
 द्वयत्ते चार्य रात्या जम खोद्याव लज्जे लगि
 चाँड्जूकय तिउछिद यस्ता रूप। एर्जिद्युते द्वय
 शमिधुत आद्युलाव रात्या जीनि अत तुलुक्कप
 यस्ताले द्वाट रोदा नायाव। अब यादे यदि
 एर्जिद्युते लाठीजार आद्य शमिधु दिभि दिमुक्तु
 बिक्ष तेउ वात्तर्युत दिला एव्यु असाव द्वयमित्तु
 दिविर।

८६ कथा विळ्ठ छाई जममूस विमुसल
 बाहिरिल यथा आठिल। अद्युद्युते दले चुक्म
 शमिधु विशय रात्तर्युत आठिल द्येण्डल असाव।
 अद्य तेउ चुक्म अस त्रासार्हि दिमुक्तु विळ्ठ
 द्येल यस्तु दाव जातीन् दिक्षित्तु मूङ्ग आक्ता
 दिय आविठिल। विळ्ठु सक्तमात यस्ति दाक्षुर्यन्ते
 असमविधि दालिय नोपासिलिल। आविल जिदि
 या बानीत चिलाई द्वयत्ते द्येल द्वयवासिन्हि

ବ୍ୟକ୍ତିଗତରେ ଯଥପୂର୍ବକରେ ଅର୍ଥିଲା ।
ଦେଖିବାକୁ ରାଜିଟି ହୁଏ ବାଜି କାହିଁ ବିଶ୍ଵାସ
ଆମ୍ବାକି ଦିନ୍ଦିନ ବ୍ୟାପକ ବୋଲି କୁଟକୀମୁଠ
କୋଟକିମୁଠ ପ୍ରତିକାଳେ ଭାବତ ଲାଗିଥିଲା । ଲାଗିଥିଲା
ଏ ପ୍ରତିକାଳେ ଉପର୍ଦ୍ଦିଲ ହେଉ ଅର୍ଥିଲ ଶାତ
ଶିଳି ଲୈପି ଶୁଣିଛୁ । ହୁଏ ବ୍ୟାପକ କୁଟକୀମୁଠ ।
ଅର୍ଥିଲା ଯଥର କୁନି ପରାମର୍ଶିତ ଧର୍ମରୂପ ରହାରନ୍ତିପ
ଉପର୍ଦ୍ଦିଲିର ଆଶ ଲାଗିଥିଲା ବିକଳେ ପୁରୁଷ ଲୈପି
ଶୁଣିଛିଥିଲା । ପାଇଁ ରାମବାଲେ ଦାତି ବାବୁ-ମହିଲା ଲାଗି
ଏହିବାଲ ଯଥର୍ମାର୍ଥ ପାତି, ଶାହଙ୍କାଳ କିନ୍ତୁ ଯଥର୍ମାର୍ଥ
କୁନି ବାଜାର ଯଥପୁରୁଷିଙ୍କ ଆମ ଜମାର୍ଥ ହାତର୍ମାଲ
ଯଥପୁର୍ବକରା । ନିଜିଲ ମାତ୍ରମୁକ୍ତ ରାଗମ ରାଜିଲିରଟିଲ
ଦିଲକର୍ତ୍ତା ଓ ଅମଲ ଲେଖ କୁଣ୍ଡଳ ରାଜାର
“କହା ପରିଚା ।” ଲାଜାର୍ଥ ଏହି ଯଥର୍ମାର୍ଥ କୁନି ହୃଦୟ
ଆଲି ଦଳି । ବାବୁ-ମହିଲାରମ୍ଭି ଲାଜାର ଦୁଇଜାନି
ଏ ଲାଗିଥିଲ ବିନ୍ଦୁ କିମି ଉପର୍ଦ୍ଦିଲ ଏହି ଯଥା
କୁଟକୀମୁଠ ଆଶ ଏହି ଉତ୍ସମ୍ଭବ ଲାଗିଥିଲ ରାଜପୁର୍ବକରା
ବିକଳିଲ ଯଥରୁଷ ଲାଗିଲ ରିହି ବିଷଳିତ ହୁଏ ।
କର୍ମବ୍ୟକ୍ତ ଶିର୍ଷ ଅଳପ କୋଣ ହେଲ ଆଶ ଆମ୍ବା
ନିରଜାର୍ଥ ଉପରକି ରାଜିଲିଲ ହେ କାହିଁ ଲାଗିଥିଲ ମି
ରାଜିଲିଲ କୁଣ୍ଡଳ କୋଣ ମୁଦ୍ରିତ ରାଜାର୍ଥ ରାଜିଲିଲ ।
ଅଳପ ଚିଲାର୍ଥ ମିଳାର୍ଥ କୁଣ୍ଡଳ ଆଶ ଆମ୍ବା—

— प्रतिक यहांत बाहिर अलंकार तथा
जोटुड़ी थीं खेलिएन्नीलि हैं आप। लाठिय सुनते
हुवे आशु बाहिर चर्जादेहे अबि प्रभाजी
ठिल कलिले आस लजडे प्रधारताधि थे,
— मुख वज्ञा दुड़ुक्स यमाति खेलायाधि ताहे
चारि टुकुफीझा कटकीदार उत्तर्गिना यनिलि,
लाटिले चामासपलास केव एक आकिया, तास
अपश्चाति निर्वय कलि दिलि। डुड़ुक निर्दिला
आठिल वे प्रतिजेव द्येवास उक्सत अग्राह-
भाजीमि आमत्रीस छोड़ सस द्युगुजाल। युक्त
कठपाठ असास देव्या-असु अववासते आसियार्दि
लाजिव, यादे रापस द्योयास लजा लजा अप-
द्युर्द्युविष एलम नवनसार्टक युद्ध अवधीर उंव
पका घामि द्येयासत मार्टि प्रति छूरात
उकुटे प्रकाशजर द्येवन्। आसिया लाजिवा,
प्रतिर्णि आमलिये जोड़े रवभव आकुलास द्यिक्षु
आकिये लाजिव, द्यमाति निर्दिलि वर्दि दिया
इले। चारि जोड़े वापि प्रजवीमि रिलेउ
जोड़ेवक चमजारि द्यिय उक्ति। प्रतिर्णि
आमलीमि द्येगारि-गड़े आमि तिमान द्युलत
आउ, जड़ायासते आपासद्यु अमि
किमान। चारि द्योष उम्हि फाक्ति-लिहि

संक्षेप इसे । कामत नहाय 'एनेमे' प्रजा
रये दुलि उत्तरि पावीव उपस्थित गढ़ प्रजा
नरले रिकर्च, किंतु तेल गढ़ प्रजाल
वावे अमोजनीय ज्ञानी । आउयान्ति प्रायाय
संक्षेप इसे, यातु प्रायाल रूले उमुद्भव
रहने गढ़ उजि लैव खला घास । युक्त
अमुदाय द्वारा कमिट्टील लौल, यातु
संक्षेप आस अन्नान् युवञ्चायस्तु तेउत्त-
नश्वर्णनठ आसक आस नजाति नियि यथा
ठकाहा अलै या यि युवञ्चा लोवाल रिक्तिमा
द्विया इलै, चार्टवाल जिक्कि द्विक्कि पाठ्तु तुड्डि
चार्युलासै नजान - चयनावायुपन्नरक्त - उक्तलक्ति
प्रिवन कन्धाल युवञ्चाओ बन्धा दूते ।

सामसिंह आरि यागव वाति
यमस्तु यातु लिंग कावी शयन जड़होल
आनिवर्जांतव उक्तव - गढ़ प्रैट - वक्ताल मुक्त
दायित्व एकिट्टि आचित्व प्रैट - हमार्यायुपन्न
उपलब्ध । पाठ्तु तेउत्ति दायित्व शीवाल ताहत
हारि जड़होल प्रैट चयन चयन एकिट्टि
आदिल । एकिट्टि लाचिट्टि चार्टवाल रिमाव
राम्य एकिट्टि वक्तिरक्ति रुद्र द्विक्कि

से चाहिे जड़तोंसे वर्णन केस हथाई बड़ा
अमेच लाभशिंख वरिवीक्षण यादी निर्मित
चाहिे जड़तोंसे विमान उपभूमिति केस-
वेगांगे शुद्धति अुष्टुप्तुर्व । तेंदु मामाडि
केस ड्रिप्टिल तो विक्षेप एवं हृष्टुर्व ।
मामायके अंतिम द्वितीय सुख कलि
द्वय कम्ब घटि ओजते क्लानि तावे लाहू
लाहू कम्बि वर्षन हृष्टुर्व । वाहिति इक्षित-
ज्ञालि-एकि उत्तिलि आस वाक्यात् वाक्य
दृष्टिल उलियाई एवं चाप्ति मामाड्यामा
काटि दुर्गाया घटि-राम्पि, छेष्टात्तिक
मामाई अज्ञे नहुया लाचिति एवं उत्तिति
उत्तिल नहुस काम घटि लोकप्रभवति
वह उम्म वाले आस अस्तिक्षीम उत्तिति
काटि आत्तिति उत्तिति जड़त-राम्पि
शीघ्रति घटि दुलितो श्रुति जड़तोंसे वास
प्रत्यक्ष । रामाति राम्पि जड़त वामाति
जैवा याहु । अप्तिति देखति तृष्ण रामाति
जैविति नहुया । आवक्षिति उत्तिति अप्तिति
क्षेत्र देखति प्रभवति याकु दुलि जैवा
क्षेत्र श्रुति ।

श्रीः निजर + वीक्ष्य आब सात्रम प्रसिद्धि
 गवति क्षेत्रिका गुरुत्व अमलाप वक्ष्यलक्ष्मि
 वक्ष्युपापात् गृह्णत् इति । लक्ष्मि ग्राम
 बक्षर + नाम्यन् गुलि पूर्णि अवति । १२ मध्याव
 दीप उवाच मृदु रैविल २५७७ श्रीः ॥
 १५ · एतिल - उत्तिष्ठ । लक्ष्मि गृह्णत् आच
 च्यासर्थात् वोक्षातिपापात् चमानम् दिभ्य इति ।

अमलितिः अम्मा देवा अम्मीमात् वाचे एति
 चित्तुदुर्जित् अस्तु इति लक्ष्मि वक्ष्युपापात् ।
 चमानलत् दहो आठिम्मालि वाहिनीक् आलाङ्ग
 वक्ष्मि विज सात्रुग्निर् आर्दीवजा लक्ष्मास-
 इति । विज निष्ठि । अस्तु रक्ष्युपापात् पत्त
 अलगा विचिलित् । नोशोरा एषित्वा शर्व
 क्षातिज्ञाली देवाप्रेमिया इति लक्ष्मि
 वक्ष्युपापात् । लक्ष्मित् अग्नर्य एतिल
 अपि अम्मीमात् अपेनार् । इति २७८
 लक्ष्मि वक्ष्युपापात् इति, विष्णार्थ, दुष्टुकीत्युत्तिः-
 वेत्रुक्ष्मि अम्मीमात् समाप्त शुद्धा वक्ष्मित्वा
 वक्ष्युपापात् अविवर्तन । अम्भे ७४ वक्ष्मित
 दिव्यांशि प्रति वहत्वे वक्ष्मि अम्भात् रामीहि
 लक्ष्मि "दिव्या" विवेष अलव वक्ष्मा इति